खेती–किसानी का स्वरूप

हालांकि जो दो विधेयक पारित किए गए हैं, उनके ऐतिहासिक महत्व से शायद ही कोई इनकार करे। इनमें एक किसानों को अपनी फसलें मंडियों से बाहर किसी को भी बेचने की छूट देता है तो दूसरा कन्ट्रैक्ट फार्मिंग का रास्ता साफ करता है।

मनोज झा।।

सरकार द्वारा पेश कृषि बिलों को लेकर लोकसभा में भले ज्यादा विवाद न हुआ हो, लेकिन राज्यसभा में रविवार को इनके इर्दगिर्द जैसे दृश्य देखने को मिले, उन्हें भारत के संसदीय इतिहास के काले अध्याय में ही जगह मिल पाएगी। हालांकि जो दो विधेयक पारित किए गए हैं, उनके ऐतिहासिक महत्व से शायद ही कोई इनकार करे। इनमें एक किसानों को अपनी फसलें मंडियों से बाहर किसी को भी बेचने की छूट देता है तो दूसरा कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग का रास्ता साफ करता है। इन दोनों विधेयकों को हरित क्रांति के बाद देश की खेती–किसानी का स्वरूप बदलने वाला सबसे बड़ा कदम कहा जा सकता है। रहा सवाल इन बदलावों की जरूरत का तो एक बात तय है कि भारत का कृषि क्षेत्र लंबे समय से समस्याग्रस्त है। हरित क्रांति वाले इलाकों– पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र को छोड़ दें तो जोतों का आकार छोटा होते जाना पूरे देश की कृषि उत्पादकता के लिए बहुत बड़ी समस्या रही है। इसका हल खोजने की कोशिश में सहकारी खेती का अभियान छेड़ा गया लेकिन वह कोई खास नतीजा नहीं दे सका और अभी उसकी भूमिका नगण्य है। छोटी जोतों के चलते खेती का आधुनिकीकरण नहीं हो पा रहा।

जीडीपी में उसका हिस्सा लगातार घटता गया है, हालांकि आबादी के बड़े हिस्से की उस पर निर्भरता ज्यों की त्यों बनी हुई है। किसान आत्महत्याओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। जिन इलाकों से ऐसी खबरें नहीं आ रहीं, वहां भी उनकी लाचारी जगजाहिर है। अपवादों को छोड़ दें तो एक आम किसान के लिए खेती घाटे का सौदा बन चुकी है और मजबूरी में उसे ढोया जा रहा है। जरूरत इस ठहराव को तोड़ने की है जो कृषि सुधारों के जरिए ही संभव है। इस बारे में बीते तीन दशकों की सारी सरकारें चर्चा करती रही हैं लेकिन किसी से इस दिशा में कुछ ठोस करते नहीं बना।

लंबे इंतजार के बाद इन विधेयकों के रूप में एक शुरुआत हुई है, लेकिन जिस माहौल और जिस अंदाज में इन्हें पारित किया गया है, उस पर अफसोस ही जताया जा सकता है। अगर विपक्ष राज्यसभा में मत विभाजन की मांग कर रहा था और सदन में हंगामा चल रहा था तो सभापति सदस्यों को शांत करने के लिए विभिन्न दलों के नेताओं से अलग से बात कर सकते थे। बहस होती और वोटिंग एक दिन बाद भी हो जाती तो क्या दिक्कत थी? विपक्ष ने भी संसद के जरिये देशवासियों को यह समझाने का मौका गंवा दिया कि इन विधेयकों में उसे वे कौन से खतरे दिखाई दे रहे हैं जिन्हें कोशिश करके भी दूर नहीं किया जा सकता। दोनों पक्षों की ओर से थोड़ी समझदारी बरतने पर पूरा देश इन बदलावों के गुण–दोष से परिचित होता और नए कानूनों को लेकर संदेह, अनिश्चय और असमंजस की स्थिति न बनती। याद रहे, ये कानून अंततः भारतीय किसानों पर ही लागू होने हैं, जिनकी ख्याति दुनिया में सबसे ज्यादा फूंक–फूंक कर कदम रखने वाले तबके की है।

मातृशक्ति

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

मातृशक्ति के प्रति आदर भाव रखें महिलाओं के प्रति सम्मान व उन्हें साथ लेकर चलने का भाव हो। भगवान कृष्ण की रासलीला दरअसल मातृशक्ति को अन्याय के प्रति जागृत करने का प्रयास था और इसमें राधा उनकी संदेशवाहक बनीं। अपने अहंकार को छोड़ो रू व्यक्तिगत जीवन में हमेशा सहज व सरल बने रहो। जिस तरह शक्ति संपन्न होने पर भी श्रीकृष्ण को न तो युधिष्ठिर का दूत बनने में संकोच हुआ और न ही अर्जुन का सारथी बनने में। एक बार तो दुर्योधन के छप्पन व्यंजन को छोड़ कर विदुरानी (विदुर की पत्नी) के घर उन्होंने सादा भोजन करना पसंद किया। यह माना जाता है कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। गंगा नदी के जल को सबसे पवित्र जल माना जाता है।

संपादकीय

नौकरशाही में सुधार

यदि हम अपनी नौकरशाही में चीन की तरह सुधार कर लें और इसे जन सेवा की तरफ मोड़ सकें तभी अपने देश में लोकतंत्र का औचित्य बनता है। वर्तमान स्थिति में हमारा लोकतंत्र न तो जनहित हासिल कर रहा है और न ही हमको विदेशियों द्वारा आपस में फूट डालने से बचा पा रहा है। यही वक्त है जब हमें अपने लोकतंत्र का मौलिक रूपांतरण करने पर विचार करना चाहिए। यहां दो बातें प्रमुख दिखती हैं। पहली यह कि लोकतंत्र के अंतर्गत हमारे शासकों को विपक्ष के साथ गहरा संवाद करना चाहिए। संवाद करने से समाज में एक मन बनता है और जैसा युधिष्ठिर कहते हैं, आपसी फूट की संभावना कम हो जाती है। दूसरी बात यह कि अपने देश में नौकरशाही का चरित्र चीन के ठीक विपरीत दिखता है। हमारी नौकरशाही द्वारा की जा रही लूट में शामिल होने के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की मांग की जा रही है। सरकारी शिक्षकों के बिना कार्य किए उच्च वेतन पाने से हमारा शिक्षा तंत्र ध्वस्त हो चुका है और हम तकनीकों में पीछे होते जा रहे हैं। नौकरशाही को भारी वेतन देने के कारण देश अंतरिक्ष आदि क्षेत्रों में निवेश नहीं कर पा रहा है और हमारा जीडीपी धीमा पड़ रहा है। न्यायालयों की नौकरशाही के चलते आम आदमी को न्याय नहीं मिल रहा है। अमेरिका द्वारा प्रसारित की जा रही चीन की निंदा से बचते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी की सही स्थिति को समझना चाहिए और स्वयं अमेरिका में लोकतंत्र की दुरूह होती स्थिति का संज्ञान लेना चाहिए।

यदि चीन को अपनी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बनानी है तो अंततरू उसे लोकतंत्र अपनाना ही पड़ेगा। लेकिन चीन बिना लोकतंत्र को अपनाए विश्व की नंबर 2 अर्थव्यवस्था बन गया है।

जनता के बीच वैधता

भरत झुनझुनवाला

आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व चीनी दूतावास के एक प्रेस अधिकारी के साथ लंबी चर्चा हुई। अंत में उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं चीन को मित्र रूप में देखता हूं या शत्रु रूप में? मैंने उत्तर दिया– शत्रु रूप में। इसके बाद हमारा संवाद समाप्त हो गया। यह लेख लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य है कि हम अपने प्रतिद्वंद्वी की शक्ति को समझें। इस समय चीन की भर्त्सना हांगकांग में लोकतंत्र को कुचलने को लेकर की जा रही है। यह सिलसिला 1989 में थ्येनानमन स्क्वेयर में लोकतंत्र समर्थकों की नृशंस हत्या के साथ शुरू हुआ था। उस समय से अमेरिकी विद्वानों का मंतव्य रहा है कि चीन में तानाशाही और बाजार के बीच मौलिक अंतर्विरोध है। यदि चीन को अपनी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बनानी है तो अंततरू उसे लोकतंत्र अपनाना ही पड़ेगा। लेकिन चीन बिना लोकतंत्र को अपनाए विश्व की नंबर 2 अर्थव्यवस्था बन गया है।

राजनीति शास्त्र में कहा जाता है कि जनता की दृष्टि में यदि शासक वैध है तो वह व्यवस्था स्थिर रहेगी। व्यवस्था के रूप का महत्व कम और जनता में वैधता के भाव का महत्व ज्यादा होता है। आइए समझें कि चीन के लोग वहां के तानाशाही शासन को किस रूप में देखते हैं। अमेरिका के एडेलमैन ट्रस्ट ने 2020 की रिपोर्ट

में कहा कि चीन के 90 प्रतिशत लोगों को अपनी सरकार पर विश्वास है। इस मुकाबले भारत में 81 प्रतिशत लोगों को और अमेरिका में तो केवल 39 प्रतिशत लोगों को अपनी सरकार पर भरोसा है। इसी तरह चीन के 59 प्रतिशत लोगों को भय है कि वे संसार की चाल में पीछे छूट जाएंगे जबकि भारत के 73 प्रतिशत लोगों को ऐसा भय है। स्पष्ट है कि हमारी तुलना में चीन के लोग अपनी सरकार को ज्यादा संख्या में वैध और सफल मानते हैं।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एश सेंटर फॉर डेमोक्रेटिक गवर्नेंस ने बताया है कि वर्ष 2011 में चीन के 61 प्रतिशत लोग स्थानीय निकायों की नौकरशाही को दयावान मानते थे। पांच साल में यानी 2016 तक ऐसे लोगों का प्रतिशत 74 हो गया। 2011 में 44 प्रतिशत लोगों के अनुसार नौकरशाही को आम जन से सरोकार था जो 2016 में 52 प्रतिशत हो गया। 2011 में 45 प्रतिशत लोग नौकरशाही को अमीरों के हित साधने वाला मानते थे जो 2016 में घटकर 40 प्रतिशत रह गया। 2011 में 32 प्रतिशत लोगों ने कहा कि नौकरशाही द्वारा गैरकानूनी वसूली की जाती है। 2016 में ऐसा कहने वालों का प्रतिशत 23 रह गया। स्पष्ट है कि चीन की नौकरशाही आमजन के प्रति सौहार्द रखती है और तानाशाह शी चिनफिंग के समय में इसमें सुधार हो रहा है।

'न्यू यॉर्क टाइम्स' में छपे एक लेख के अनुसार चीन ने पिछले 20 वर्षों में नौकरशाही के चरित्र में मौलिक बदलाव किया है। नौकरशाहों को एक मापदंड के अंतर्गत पॉइंट दिए जाते थे जिनके अनुसार उनका प्रमोशन होता था। नौकरशाही पहले जड़ थी, जिसको पूर्व तानाशाह तंग श्याओफिंग ने एक 'पूंजीवादी मशीन' के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस संदर्भ में विचारणीय बात यह है कि अमेरिका अन्य देशों में लोकतंत्र पर इतना जोर क्यों देता रहा है। महाभारत के शांति पर्व अध्याय 108 में युधिष्ठिर कहते हैं, 'गणतंत्र के शूर पुरुषों में परस्पर भेद ही नाश का कारण है।' पुनः 'गणराज्य के शूर आपस में चित्त की अनैक्यता के कारण शत्रुओं के वश में हुआ करते हैं।'

सूडोकु नवताल-5483

मध्यम

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5482 का हल

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

अमेरिकी आग्रहों का अंधानुकरण नहीं करना

मोहन। युधिष्ठिर के इन वाक्यों से समझ में आता है कि अमेरिका द्वारा भारत आदि देशों में जो गणतंत्र को पुरजोर तरीके से बढ़ाया जा रहा है उसका संभावित कारण उसकी यह इच्छा है कि भारत में फूट डालकर वह हमें अपने वश में कर सके। इसलिए हमें लोकतंत्र के अमेरिकी आग्रहों का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। विशेषकर अमेरिका द्वारा जो चीन की लगातार निंदा की जा रही है, उससे बचना चाहिए। अमेरिका का पिछले 30 वर्षों का चीन का आकलन पूर्णतया गलत सिद्ध हुआ है। इन अवगुणों के बावजूद यह भी सत्य है कि लोकतंत्र में आम आदमी के मानसिक स्वातंत्र्य के कारण मानव समाज के विकास में भारी वृद्धि हुई है। लोकतंत्र के अंदर तमाम नए आविष्कार हुए हैं जिनसे मानव समाज आगे बढ़ा है। इसलिए हमारे सामने चुनौती यह है कि हम लोकतंत्र के खुलेपन के साथ चीन के सुशासन की वैधता को जोड़ दें।